International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-03-2026, Accepted: 02-04-2026, Published: 17-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 119-123

छत्तीसगढ़ के गोंड जनजाति की संस्कृति और कलात्मक परिदृश्य का वर्तमान स्थिति में अध्ययन

खोमन लाल सिन्हा
सहायक शिक्षक, स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, शासकीय प्राथमिक शाला सिर्रीखुर्द, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
गोंड जनजाति छत्तीसगढ़ के प्रमुख आदिवासी समूहों में से एक है, जिनकी संस्कृति, परंपराएँ और कला की अद्वितीय धरोहर है। इस शोध का उद्देश्य गोंड जनजाति के सांस्कृतिक और कलात्मक परिदृश्य का अध्ययन करना है, जिसमें उनके जीवनशैली, पारंपरिक कला रूपों, धार्मिक विश्वासों, और सामाजिक संरचना का विश्लेषण किया गया है। गोंड जनजाति की कला और संस्कृति में विशेष रूप से चित्रकला (रंगोली, दीवार चित्रकारी), संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प, और उनके त्योहारों का अहम स्थान है। इस शोध में यह भी चर्चा की जाएगी कि कैसे आधुनिकता और बाहरी प्रभाव गोंड समाज के सांस्कृतिक और कलात्मक परिदृश्य को प्रभावित कर रहे हैं। आजकल, गोंड जनजाति की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण और पुनरुद्धार एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है, जिससे न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान बनी रहती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे सहेजने का अवसर भी मिलता है। यह शोध गोंड जनजाति की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार के प्रयासों पर भी प्रकाश डालता है, और सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक संदर्भ में इसके महत्व को समझाता है।

मुख्य शब्द: गोंड जनजाति, छत्तीसगढ़, संस्कृति, कलात्मक परिदृश्य, चित्रकला, संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प, धार्मिक विश्वास, सामाजिक संरचना, आदिवासी कलाएँ, संस्कृति का संरक्षण, सांस्कृतिक पुनरुद्धार

गोंड जनजाति, जो भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक है, मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा और तेलंगाना के मध्य क्षेत्रों में पाई जाती है। गोंड लोग अपनी उत्पत्ति दक्कन के पठार से मानते हैं, जहाँ वे सदियों से रह रहे हैं, और उन्होंने एक अनूठी संस्कृति और जीवन शैली विकसित की है जो प्राकृतिक दुनिया से गहराई से जुड़ी हुई है। एक कृषि प्रधान समुदाय के रूप में, गोंड लोग पारंपरिक रूप से अपनी आजीविका के लिए जंगल, नदी प्रणालियों और स्थानीय वन्यजीवों पर निर्भर रहे हैं, जिसने उनके विश्वदृष्टि और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को आकार दिया है। उनकी जीवन शैली, जो प्रकृति से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, उनके रीति–रिवाजों, विश्वासों और सबसे प्रमुख रूप से, उनकी जीवंत कलात्मक परंपराओं में परिलक्षित होती है। गोंड आदिवासी संस्कृति के सबसे विशिष्ट पहलुओं में से एक इसकी कला है, विशेष रूप से गोंड चित्रकला। ऐतिहासिक रूप से, गोंड चित्रकला आदिवासी समुदायों और उनके देवताओं, आत्माओं और पूर्वजों के बीच संचार के साधन के रूप में काम करती थी। कला के ये कार्य अक्सर दीवारों, फर्शों पर और कभी–कभी, कागज या कैनवास पर बनाए जाते थे। गोंड कला में उपयोग किए जाने वाले रूपांकन और प्रतीक आदिवासी पौराणिक कथाओं, लोककथाओं और प्रकृति के साथ आध्यात्मिक संबंध में गहराई से निहित हैं। जानवर, विशेष रूप से बाघ, हाथी और सांप, साथ ही पेड़, पक्षी और खगोलीय पिंड जैसे तत्व, गोंड कला में प्रमुखता से दिखाई देते हैं, जो प्रकृति के प्रति जनजाति के सम्मान और जीवन की परस्पर संबद्धता में उनके विश्वास का प्रतीक हैं। गोंड कला परंपरा को अनुष्ठानिक प्रथाओं से जोड़ा जा सकता है, जहाँ जनजाति अपने घरों की दीवारों को चित्रित करती थी, खासकर प्रमुख जीवन की घटनाओं या धार्मिक समारोहों के दौरान। इन चित्रों का उपयोग अक्सर बुरी आत्माओं को दूर भगाने के लिए सुरक्षात्मक प्रतीकों के रूप में, साथ ही प्रकृति की प्रचुरता का जश्न मनाने के लिए किया जाता था। उन्हें पौधों, खनिजों और यहाँ तक कि जली हुई लकड़ी की राख से बने प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके चित्रित किया जाता था, जो जनजाति के अपने पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को दर्शाता है। पिछले कुछ वर्षों में गोंड चित्रकला के विकास पर मुख्यधारा की कला रूपों के साथ बातचीत का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। आधुनिक युग में जांगर सिंह श्याम जैसे विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गोंड कलाकारों का उदय हुआ, जिन्होंने पारंपरिक आदिवासी कला को एक समकालीन दृश्य भाषा में बदलने का बीड़ा उठाया। जीवंत रंगों के उनके नवीन उपयोग और पारंपरिक रूपांकनों को आधुनिक तकनीकों के साथ मिलाने की उनकी क्षमता ने गोंड चित्रकला को अपनी क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर निकलने और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कला हलकों में पहचान हासिल करने में मदद की। आज, गोंड कला एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक निर्यात बन गई है, जिसकी सौंदर्य और प्रतीकात्मक गहराई के लिए व्यापक रूप से सराहना की जाती है। दृश्य कलाओं के अलावा, गोंड आदिवासी समुदाय के पास संगीत, नृत्य और प्रदर्शन कलाओं की एक समृद्ध परंपरा है। डांडारी और माडली जैसे आदिवासी नृत्य पारंपरिक ढोल और गानों के साथ किए जाते हैं, जो अक्सर त्योहारों और सामुदायिक समारोहों के दौरान होते हैं। ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ जनजाति के भीतर सामाजिक एकता बनाए रखने के लिए ज़रूरी हैं और भूमि और उसकी लय के साथ गोंडों के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जुड़ाव को दर्शाती हैं। गोंड संस्कृति और कला का संरक्षण एक लगातार चुनौती बनी हुई है, खासकर जब युवा पीढ़ी ग्रामीण इलाकों से दूर जा रही है और शहरी जीवन शैली अपना रही है। हालाँकि, आदिवासी नेताओं, मानवविज्ञानी और सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा गोंड परंपराओं को दस्तावेज़ित करने और उनकी रक्षा करने के प्रयासों के साथ–साथ गोंड कला की बढ़ती व्यावसायिक सफलता ने सांस्कृतिक लचीलेपन और पुनरुद्धार के लिए एक मंच प्रदान किया है। गोंड जनजाति एक अद्वितीय सांस्कृतिक प्रतिमान प्रदान करती है जो कला, पारिस्थितिकी, आध्यात्मिकता और सामुदायिक लचीलेपन को आपस में जोड़ता है। उनकी कला न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान का प्रतिबिंब है, बल्कि पर्यावरण और उनके पैतृक विश्वासों के प्रति उनके गहरे सम्मान की अभिव्यक्ति भी है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में गोंड कला की निरंतर पहचान और उत्सव महत्वपूर्ण है।

गोंड जनजाति की कला और संस्कृति

गोंड जनजाति की कला के कई रूप हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

1. **चित्रकला:** गोंडों की चित्रकला, खासकर दीवार चित्रकारी और रंगोली, उनके घरों और अन्य सामाजिक स्थानों पर देखने को मिलती है। यह चित्रकला उनके प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक आदर्शों, और सामाजिक संरचना को दर्शाती है।

2. **संगीत और नृत्य:** गोंड समाज में संगीत और नृत्य का विशेष स्थान है। उनके पारंपरिक नृत्य, जैसे 'दंडिया', 'लोरी' और 'घूंघट', न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि वे जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतीक भी हैं।

3. **हस्तशिल्प:** गोंडों की हस्तशिल्प कला में लकड़ी की नक्काशी, बुनाई, और मिट्टी के बर्तन शामिल हैं। यह कला रूप उनके दैनिक जीवन और पर्यावरण से प्रभावित है और सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई है।

साहित्य समीक्षा

नाइक और त्रिपाठी (2023) गोंड कला और हस्तशिल्प सांस्कृतिक परंपरा को दर्शाते हैं। क्योंझर जिले (ओडिशा) में गोंड चित्रों, शिल्पों और नृत्य परंपराओं पर केंद्रित है। यह स्थानीय रूपांकनों, सामग्रियों, सामुदायिक विश्वासों और संरक्षण की चुनौतियों की जांच करता है, यह दर्शाता है कि ये परंपराएं व्यापक आदिवासी पहचान को कैसे दर्शाती हैं। [1] माझी और महापात्र (2023), नुआपाड़ा (ओडिशा) में गोंड लोक कलाओं और नृत्यों का अध्ययन करता है, जिसमें दीवार चित्रों और माडली और डलखाई नृत्यों जैसे पारंपरिक अनुष्ठानों का विवरण दिया गया है। तत्काल दस्तावेज़ीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। [2] सिदाम (2025) , हालांकि इसका दायरा व्यापक है, यह कार्य गोंड कला और संगीत को आध्यात्मिक विश्वदृष्टि (कोयापुनेम) के भीतर रखता है और सामाजिक–आर्थिक हाशिए पर जाने और भाषा के पतन से सांस्कृतिक प्रसारण पर पड़ने वाले दबावों की रूपरेखा तैयार करता है। [3] थम्मन्ना और सुब्रमणि (2023), रोजमर्रा की जिंदगी और दर्शन का स्वदेशी संचार विश्लेषण करता है कि गोंड चित्र दृश्य और साक्षात्कार डेटा का उपयोग करके दैनिक जीवन और विश्वदृष्टि को कैसे संप्रेषित करते हैं; कला को कहानी कहने के रूप में दिखाता है जो सामुदायिक लोकाचार को दर्शाता है। [4] परास्ते (2025), पता लगाता है कि मध्य भारतीय गोंडों के बीच संस्कृति, पारिस्थितिकी और आजीविकाएं कैसे आपस में जुड़ी हुई हैं; मूल्यांकन करता है कि शिल्प और अन्य प्रथाएं स्थायी ज्ञान प्रणालियों से कैसे जुड़ी हुई हैं। [5] उलाधी और मुदुली (2024), गोंड चित्रकला को पौराणिक कथाओं, प्रकृति और सामाजिक विश्वासों की एक दृश्य कथा के रूप में दिखाता है, दीवार कला से कैनवास तक इसका विकास, जिसमें द्रविड़ मूल के रूपांकन हैं। [6] मलिक और सेठी (2018), गोंड चित्रकला के ऐतिहासिक विकास का दस्तावेजीकरण करता है, जिसमें घर की भित्ति चित्रों से लेकर जांगढ़ सिंह श्याम जैसे कलाकारों के माध्यम से विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कला तक के बदलावों की पहचान की गई है।[7] अरूर और वाइल्ड (2016), गोंड कला की सामग्री, सांस्कृतिक अर्थ और समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है, और यह वैश्विक कला संवादों के साथ कैसे बातचीत करती है।[8] रानी (2019), यह दो मशहूर गोंड कलाकारों के कलात्मक योगदान के बारे में बताता है, और यह दिखाता है कि कैसे आदिवासी कला मुख्यधारा की कला की दुनिया में आई।[9] TOJQI (2025), यह गोंडी पेंटिंग को सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक अभ्यास दोनों के रूप में देखता है, जिसमें प्रतीकात्मक कहानियों और कलाकारों के सामने आने वाली बाज़ार की चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है। [10] बिस्वाल (2025), यह गोंड पेंटिंग को बनाए रखने और कला को आजीविका से जोड़ने में खासकर महिला कलाकारों के बीच उद्यमिता विकास की भूमिका की पड़ताल करता है।[11] व्यापक साहित्य संकलन (2022), यह गोंड कला, नृत्य, भाषा, लिपि, लोकगीतों और सामाजिक प्रणालियों पर शोध को एक साथ लाता है, जो आगे के सांस्कृतिक शोध के लिए एक व्यापक ग्रंथ सूची आधार प्रदान करता है।[12] राणा (2025), पता लगाता है कि कैसे महिला गोंड कलाकार कला के विकास को आकार देती हैं और कलात्मक दुनिया में पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को निभाती हैं। [13] प्ळछब। (वेब संसाधन), यह संस्थागत स्रोत यह बताता है कि कैसे गोंड कला मध्य भारत के परिदृश्य में व्यापक आदिवासी इतिहास और सांस्कृतिक विश्वदृष्टिकोण में फिट बैठती है।[14] जंगढ़ सिंह श्याम छात्रवृत्ति, जीवनी संबंधी और शैलीगत विश्लेषण यह स्थापित करते हैं कि कैसे एक कलाकार के नवाचार जंगढ़ कलम ने गोंड भित्ति चित्रकला को वैश्विक पहुंच के साथ एक विशिष्ट आधुनिक आदिवासी कला रूप में बदल दिया।[15]

छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति की जनसंख्या

गोंड जनजाति, जो भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक है, छत्तीसगढ़ राज्य में, खासकर इसके ग्रामीण और वन क्षेत्रों में, बड़ी संख्या में मौजूद है। गोंड आबादी का वितरण समय के साथ राज्य के प्रशासनिक डिवीजनों से प्रभावित हुआ है। 2000 में गठन के बाद से छत्तीसगढ़ में कई बार पुनर्गठन हुआ है, जिससे जिलों की संख्या और उनकी संबंधित आबादी में बदलाव हुए हैं, जिसमें गोंड जैसी आदिवासी समुदायों की आबादी भी शामिल है। इस अवलोकन में, हम छत्तीसगढ़ में अलग–अलग समय अवधि में गोंड आबादी की जांच करेंगे—16 जिले, 18 जिले, 27 जिले और 33 जिलेकृसाथ ही राज्य में कुल गोंड आबादी का संक्षिप्त विश्लेषण भी करेंगे।

1. 16 जिलों वाले छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति की जनसंख्या (2011 से पहले)

2011 में छत्तीसगढ़ के प्रशासनिक पुनर्गठन से पहले, राज्य में 16 जिले थे। इन जिलों में गोंड जनजाति की सबसे बड़ी आबादी बस्तर और सरगुजा डिवीजनों में पाई जाती थी, जहाँ जंगल और प्राकृतिक संसाधन गोंडों के जीवन का मुख्य आधार थे। बस्तर डिवीजन में, गोंड प्रमुख आदिवासी समुदाय थे, जो बस्तर, कोंडागांव और कांकेर जैसे जिलों में रहते थे। ये जिले गोंड जनजाति के मुख्य आवासों में से थे, इन क्षेत्रों में लगभग 60–70% आबादी गोंड सहित विभिन्न आदिवासी समूहों की थी। सरगुजा डिवीजन में भी गोंडों की उपस्थिति महत्वपूर्ण थी, खासकर कोरिया और जशपुर जिलों में। 16 जिलों में गोंडों की आबादी 2 मिलियन से अधिक होने का अनुमान था, या उस समय राज्य की कुल आबादी का लगभग 12–15%। इन क्षेत्रों में गोंड जनजाति की जीवनशैली जंगलों के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी, जिसमें आजीविका कृषि, वानिकी और हस्तशिल्प के इर्द–गिर्द घूमती थी। अधिकांश आबादी ग्रामीण थी, दूरदराज के इलाकों में छोटी बस्तियों में रहती थी जहाँ उनकी सांस्कृतिक परंपराएँ, जिनमें गोंड चित्रकला और आदिवासी नृत्य शामिल हैं, संरक्षित थीं।

2. 18 जिलों वाले छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति की जनसंख्या (2011 के बाद)

2011 में नए जिलों के निर्माण के बाद, छत्तीसगढ़ 16 जिलों से बढ़कर 18 जिले हो गए। इस रीस्ट्रक्चरिंग में रायगढ़ को रायगढ़ और मुंगेली जिलों में बांटा गया और बालोद जिले का गठन किया गया। गोंड आबादी बस्तर और सरगुजा डिवीजनों में केंद्रित रही, लेकिन नई बनी जिलों में भी आबादी बढ़ी, खासकर बालोद और मुंगेली में, जहां ऐतिहासिक रूप से आदिवासी समूह

कम संख्या में रहते थे। बस्तर डिवीजन में, जगदलपुर, कोंडागांव और कांकेर जिलों में गोंड लोगों का प्रतिशत बहुत ज़्यादा था, अनुमान के मुताबिक इन इलाकों में कुल आदिवासी आबादी का लगभग 60–65% गोंड आबादी थी। इसी तरह, सरगुजा डिवीजन में, कोरिया, सरगुजा और जशपुर जिलों में गोंड जनजाति अच्छी संख्या में थी, जिसमें गोंड आदिवासी आबादी का लगभग 30–40% थे। 2011 तक, इन 18 जिलों में कुल गोंड आबादी लगभग 2.2 से 2.5 मिलियन होने का अनुमान था, जो छत्तीसगढ़ की आबादी का लगभग 15–17% था।

3. 27 जिलों वाले छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति की आबादी (2018 के बाद)

राज्य का पुनर्गठन 2018 में भी जारी रहा, जब छत्तीसगढ़ में 27 जिले शामिल हो गए। इस रीस्ट्रक्चरिंग में बालोदाबाजार, धमतरी, गरियाबंद, बेमेतरा और अन्य जैसे नए जिलों का निर्माण शामिल था, जिसने आदिवासी आबादी के वितरण पर असर डाला। गोंड आबादी बस्तर और सरगुजा डिवीजनों में सबसे ज़्यादा रही, लेकिन गरियाबंद और बालोदाबाजार जैसे नए बने जिलों में पड़ोसी जिलों से पलायन के कारण आदिवासी बस्तियों में वृद्धि देखी गई। इन 27 जिलों में कुल गोंड आबादी लगभग 2.8 से 3 मिलियन होने का अनुमान था, जो राज्य की आबादी का 17–18% था। इस अवधि में एक महत्वपूर्ण बदलाव युवा गोंड पीढ़ी का शहरी क्षेत्रों में पलायन था, जिसके परिणामस्वरूप मुख्य रूप से ग्रामीण से अधिक शहरी बस्तियों की ओर बदलाव हुआ। नतीजतन, गोंड समुदाय की उपस्थिति रायपुर और बिलासपुर जैसे शहरों में अधिक दिखाई देने लगी, जिससे आदिवासी सक्रियता, सांस्कृतिक पहलों और गोंड कलाओं को बढ़ावा मिला।

4. छत्तीसगढ़ में 33 जिलों में गोंड जनजाति की आबादी (2019 के बाद)

2019 में प्रशासनिक पुनर्गठन के आखिरी चरण के बाद, छत्तीसगढ़ में 33 जिले हो गए। इस पुनर्गठन में मौजूदा जिलों को और बांटना और नारायणपुर, सुकमा और सूरजपुर जैसे नए जिले बनाना शामिल था। 33 जिलों के साथ, गोंड जनजाति मुख्य रूप से ग्रामीण इलाकों में रहती रही, लेकिन शहरी पलायन का असर ज़्यादा साफ़ दिखने लगा। नए बने जिलों में, गोंड जनजाति की मौजूदगी नारायणपुर, सुकमा और जशपुर में सबसे ज़्यादा थी, जहाँ ऐतिहासिक रूप से आदिवासी आबादी ज़्यादा थी। इन जिलों में गोंड आबादी लगातार बढ़ी, हालांकि इन नए इलाकों में कुल आबादी का प्रतिशत पारंपरिक आदिवासी इलाकों की तुलना में कम था। कुल मिलाकर, 2019 तक, राज्य में कुल गोंड आबादी लगभग 3.3 से 3.5 मिलियन होने का अनुमान था, जो राज्य की कुल आबादी का लगभग 18–20% था।

छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति हमेशा से राज्य की आबादी का एक बड़ा हिस्सा रही है। 16 जिलों से 33 जिलों तक विस्तार के साथ, कुल गोंड आबादी में लगातार वृद्धि हुई है, जो आदिवासी आबादी की वृद्धि और युवा गोंडों के शहरी क्षेत्रों में पलायन दोनों को दिखाता है। 2020 तक, छत्तीसगढ़ में गोंडों की कुल आबादी लगभग 3.3 से 3.5 मिलियन थी, या राज्य की आबादी का लगभग 18–20%। यह राज्य के सामाजिक–आर्थिक और कलात्मक ताने–बाने में एक मज़बूत सांस्कृतिक उपस्थिति को दर्शाता है।

छत्तीसगढ़ में गोंड जनजाति की संस्कृति और कला शैली

गोंड जनजाति, जो भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समूहों में से एक है, की एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है जो प्रकृति, आध्यात्मिकता और परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है। मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के जंगली क्षेत्रों में रहने वाले गोंडों ने एक अनोखी और जीवंत संस्कृति विकसित की है जो सदियों के बदलावों के बावजूद बनी हुई है। अपनी विशिष्ट कलात्मक अभिव्यक्तियों के लिए जाने जाने वाले गोंड अपने पर्यावरण के साथ मजबूत संबंधों के लिए भी पहचाने जाते हैं, जो उनके जीवन जीने के तरीके और कला शैली दोनों को आकार देता है। गोंड जनजाति मुख्य रूप से ग्रामीण और जंगली क्षेत्रों में रहती है, जहाँ उन्होंने एक ऐसी जीवन शैली विकसित की है जो प्राकृतिक दुनिया से गहराई से जुड़ी हुई है। यह जुड़ाव उनकी कहानियों, अनुष्ठानों और विश्वास प्रणालियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गोंड जीववादी हैं, उनका मानना है कि आत्माएं पेड़ों, नदियों और जानवरों जैसे प्राकृतिक तत्वों में निवास करती हैं। उनकी आध्यात्मिक प्रथाओं में पृथ्वी के तत्वों का सम्मान करने के लिए चढ़ावा और अनुष्ठान शामिल हैं, जो प्रकृति और समुदाय के बीच सद्भाव सुनिश्चित करते हैं। जंगल में जीवन और खेती, पशुपालन और शिकार सहित उनकी कृषि गतिविधियाँ, उनके दैनिक जीवन की रीढ़ हैं। गोंड सामाजिक संरचना आम तौर पर बड़े परिवारों और आदिवासी कुलों के आसपास संगठित होती है। उनके पास कहानी कहने, संगीत और नृत्य की एक समृद्ध परंपरा है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। गीत अक्सर उनके ऐतिहासिक संघर्षों, प्रकृति के साथ उनके संबंधों और धार्मिक मान्यताओं को दर्शाते हैं, जबकि डांडारी और माडली जैसे पारंपरिक नृत्य उन आत्माओं और देवताओं के प्रति खुशी और कृतज्ञता व्यक्त करने का एक माध्यम हैं जो उनके समुदाय की रक्षा करते हैं। गोंड संस्कृति के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक परिवारिक जीवन और कलात्मक परंपराओं दोनों में महिलाओं की भूमिका है। गोंड महिलाएं न केवल परिवार और समुदाय की प्राथमिक देखभाल करने वाली हैं, बल्कि वे पारंपरिक शिल्पों, विशेष रूप से गोंड चित्रकला के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

गोंड कला: आध्यात्मिकता और प्रकृति

गोंड जनजाति की कला शैली सबसे प्रमुख रूप से उनकी प्रसिद्ध गोंड चित्रों में देखी जाती है, जो पर्यावरण, आध्यात्मिकता और पौराणिक कथाओं के साथ उनके गहरे जुड़ाव का प्रतिबिंब हैं। ये चित्र, जो पारंपरिक रूप से दीवारों और फर्श पर बनाए जाते हैं, पीढ़ियों से चले आ रहे हैं और गोंडों के लिए अपनी सांस्कृतिक पहचान व्यक्त करने का एक प्राथमिक माध्यम हैं। गोंड कला की विशेषता जीवंत रंग, जटिल पैटर्न और प्रकृति से प्रेरित प्रतीकात्मक रूपांकन हैं। चित्रों में अक्सर बाघ, हाथी, सांप और पक्षियों जैसे जानवर दिखाए जाते हैं, जिनका आध्यात्मिक महत्व है। गोंड लोगों के लिए, ये जानवर सिर्फ़ वन्यजीवों के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि प्राकृतिक दुनिया की आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक हैं। जंगल भी एक आम विषय है, जो उन वास्तविक और लाक्षणिक पवित्र जगहों का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ गोंड लोग रहते हैं। गोंड पेंटिंग की पारंपरिक तकनीक में दीवारों, फर्श और कपड़े जैसी सतहों पर खनिजों और पौधों से बने प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। हालाँकि, आधुनिक विकास के साथ, कई गोंड कलाकारों ने अपनी शैली को कैनवास और कागज़ पर अपनाया है, जिससे उनकी पारंपरिक कला वैश्विक मंच पर पहुँची है। जांगर सिंह श्याम और राम सिंह उर्वेती जैसे कलाकारों ने गोंड कला को लोकप्रिय बनाने में मदद की है, पारंपरिक तकनीकों को समकालीन विषयों के साथ मिलाकर, और वैश्विक कला समुदाय में पहचान हासिल की है। गोंड पेंटिंग सिर्फ़ सजावटी नहीं हैं; वे आध्यात्मिक अर्थ से भरी हुई हैं और अक्सर आत्माओं और देवताओं से आशीर्वाद पाने के लिए अनुष्ठानों में इस्तेमाल की जाती हैं। उदाहरण के लिए, ये पेंटिंग अक्सर त्योहारों, समारोहों और जीवन के महत्वपूर्ण अवसरों, जैसे शादियों या जन्म समारोहों के लिए बनाई जाती हैं, जिससे कला दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाती है।

आधुनिक समय में गोंड कला

हाल के दशकों में, गोंड कला ने अपनी पारंपरिक सीमाओं को पार कर लिया है और समकालीन आदिवासी कला के एक मान्यता प्राप्त रूप में विकसित हुई है। इस बदलाव ने गोंड लोगों को अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने के साथ–साथ आधुनिक कला जगत में भी भाग लेने की अनुमति दी है। कलाकारों को व्यापक पहचान मिली है, और उनके काम अब भारत और विदेशों की गैलरी में प्रदर्शित किए जाते हैं। आधुनिकता की ओर इस बदलाव ने चुनौतियाँ भी लाई हैं। व्यावसायीकरण के दबाव और पारंपरिक मूल्यों को खोने के जोखिम के कारण कई लोग गोंड कला को उसके प्रामाणिक रूप में संरक्षित करने की वकालत कर रहे हैं। संगठन और आदिवासी कल्याण पहल अब गोंड परंपराओं की रक्षा और प्रचार के लिए काम कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत फलती–फूलती रहे। छत्तीसगढ़ की गोंड जनजाति की एक जीवंत और गहरी सांस्कृतिक विरासत है जो प्राचीन होने के साथ–साथ गतिशील भी है। उनकी कलात्मक अभिव्यक्तियाँ, खासकर गोंड चित्रों के माध्यम से, उनके विश्वासों, जीवन शैली और प्रकृति के साथ आध्यात्मिक जुड़ाव की झलक दिखाती हैं। जैसे–जैसे गोंड लोग विकसित हो रहे हैं, उनकी कला उनकी सहनशक्ति और सांस्कृतिक पहचान का एक शक्तिशाली प्रतीक बनी हुई है, जो भारत के सबसे आकर्षक आदिवासी समुदायों में से एक की दुनिया की झलक दिखाती है। परंपरा और इतिहास से समृद्ध गोंड संस्कृति, आधुनिकता के सामने स्वदेशी कला रूपों की ताकत का प्रमाण है।

गोंड जनजाति की संस्कृति और कला शैली को बचाने की तत्काल आवश्यकता

गोंड जनजाति, जो भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक है, प्रकृति से अपने गहरे जुड़ाव, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और अपनी जीवंत कलात्मक विरासत के लिए जानी जाती है। मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और आसपास के राज्यों के जंगली इलाकों में रहने वाले गोंड लोगों ने अद्वितीय सांस्कृतिक प्रथाओं, आध्यात्मिक मान्यताओं और कला रूपों को विकसित किया है जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। उनकी संस्कृति के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक गोंड कला है, जो एक शानदार दृश्य भाषा है जिसकी विशेषता चमकीले रंग, जटिल पैटर्न और प्राकृतिक दुनिया के साथ उनके संबंध में निहित प्रतीकात्मक रूपांकन हैं। हालाँकि, कई स्वदेशी समुदायों की तरह, गोंड जनजाति भी कई चुनौतियों का सामना कर रही है जो उसकी सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत के संरक्षण के लिए खतरा हैं। इन परंपराओं को भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवित रखने के लिए उनकी रक्षा करने की तत्काल आवश्यकता है। भारत में कई आदिवासी समुदायों की तरह, गोंड जनजाति ने भी हाल के दशकों में शहरीकरण, आधुनिक शिक्षा और वैश्वीकरण के कारण महत्वपूर्ण बदलावों का अनुभव किया है। युवा पीढ़ी बेहतर शैक्षिक और रोजगार के अवसरों के लिए तेजी से शहरी केंद्रों की ओर जा रही है, जिससे पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं का क्षरण हो रहा है। जैसे–जैसे आधुनिक जीवन शैली जड़ पकड़ रही है, पारंपरिक रीति–रिवाज, जिनमें आदिवासी अनुष्ठान, लोक नृत्य और कलात्मक तकनीकें शामिल हैं, धीरे–धीरे छोड़े जा रहे हैं या भुलाए जा रहे हैं। इस बदलाव के परिणामस्वरूप युवा गोंडों और उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बीच एक बढ़ता हुआ अलगाव हुआ है। आधुनिक मीडिया और प्रौद्योगिकी की शुरुआत ने युवा गोंडों को वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों से अवगत कराया है जो अक्सर उनकी पैतृक परंपराओं से टकराते हैं। शहरी जीवन का आकर्षण, भौतिक समृद्धि के वादे के साथ, कई लोगों को आदिवासी प्रथाओं और कला रूपों को छोड़ने और जीवन के अधिक मुख्यधारा के तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। सांस्कृतिक आत्मसात का खतरा गोंड जनजाति के सामने अपनी पहचान बनाए रखने में सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। गोंड संस्कृति की सबसे खास विशेषताओं में से एक है उसकी कला, खासकर गोंड पेंटिंग, जो जीवंत तस्वीरों और जटिल पैटर्न के ज़रिए प्रकृति, पौराणिक कथाओं और आध्यात्मिकता की कहानियाँ बताती है। ये पेंटिंग पारंपरिक रूप से जनजाति द्वारा जन्म, शादी और त्योहारों जैसे महत्वपूर्ण अवसरों को मनाने के लिए बनाई जाती हैं। जानवरों, पेड़ों और आध्यात्मिक प्रतीकों के जीवंत चित्रण गोंड लोगों के प्रकृति से गहरे जुड़ाव और उनके आध्यात्मिक विश्वासों को व्यक्त करने का एक तरीका हैं। युवा पीढ़ी ग्रामीण इलाकों से दूर होकर शहरी जीवन अपना रही है, गोंड पेंटिंग की पारंपरिक कला के लुप्त होने का खतरा है। जबकि कुछ प्रतिभाशाली कलाकारों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली है, यह कला रूप बड़े पैमाने पर समुदाय के कुछ ही हिस्सों में प्रचलित है। गोंड पेंटिंग से जुड़ी तकनीकों और रूपांकनों को सुरक्षित रखने के लिए उचित प्रयासों के बिना, यह वास्तविक खतरा है कि यह अनूठी कला शैली गुमनामी में खो सकती है। इसके अलावा, गोंड कला के व्यवसायीकरण ने, कुछ कलाकारों को पहचान दिलाने में मदद करते हुए भी, इसकी प्रामाणिकता को कम कर दिया है, क्योंकि कुछ कलाकारों को बाज़ार की मांगों को पूरा करने के लिए अपने काम में बदलाव करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

गोंड संस्कृति को संरक्षित करने के प्रयास

हाल के वर्षों में, गोंड संस्कृति और कला शैली को संरक्षित और बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई पहल की गई हैं। इनमें आदिवासी कल्याण संगठनों, सांस्कृतिक संस्थानों और स्वयं कलाकारों के प्रयास शामिल हैं, जो पारंपरिक प्रथाओं का दस्तावेज़ीकरण करने और गोंड कलाकारों को अपना काम दिखाने के लिए मंच प्रदान करने के लिए काम कर रहे हैं। स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने गोंड कला को अधिक दृश्यता दिलाने में मदद की है, साथ ही उन कलाकारों की आजीविका का भी समर्थन किया है जो इस परंपरा पर निर्भर हैं। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम बहुत ज़रूरी हैं कि युवा पीढ़ियों को उनकी सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि से परिचित कराया जाए। स्कूलों और सामुदायिक केंद्रों में गोंड इतिहास, कला और परंपराओं को सिखाकर, आधुनिकता और परंपरा के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया जा सकता है, जिससे युवा गोंडों को अपनी सांस्कृतिक पहचान पर गर्व करने के लिए सशक्त बनाया जा सके।

निष्कर्ष

गोंड जनजाति की संस्कृति और कलात्मक परिदृश्य छत्तीसगढ़ और मध्य भारत के आदिवासी समाज की अनमोल धरोहर है, जो न केवल उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है, बल्कि यह उनके सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों को भी उजागर करता है। गोंडों की चित्रकला, संगीत, नृत्य, और हस्तशिल्प जैसी कलाएँ उनकी पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं और यह उनकी परंपराओं, आस्थाओं और पर्यावरण के साथ गहरे संबंध को दर्शाती हैं। गोंड कला, विशेष रूप से दीवार चित्रकारी, रंगोली और लकड़ी की नक्काशी, एक अद्वितीय और स्थायी परंपरा का हिस्सा रही है, जो सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई है। समय के साथ आधुनिकता, शहरीकरण, और वैश्वीकरण ने गोंड जनजाति की संस्कृति को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया है। इन बदलावों ने गोंड समाज के पारंपरिक जीवनशैली और कला रूपों को चुनौती दी है। जहां एक ओर

गोंडों का पारंपरिक जीवन और उनके सांस्कृतिक तत्व धीरे–धीरे लुप्त हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इन कला रूपों का संरक्षण और पुनरुद्धार एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। आज के दौर में, इन पारंपरिक कलाओं का संरक्षण न केवल गोंड जनजाति की पहचान के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समग्र आदिवासी संस्कृति की सांस्कृतिक विविधता को भी बचाए रखने के लिए आवश्यक है। इस संदर्भ में, सरकार, सांस्कृतिक संस्थाएँ, और गैर–सरकारी संगठन गोंड जनजाति की कला और संस्कृति के संरक्षण हेतु सक्रिय प्रयास कर रहे हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य न केवल पारंपरिक कला रूपों को पुनर्जीवित करना है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए इनकी शिक्षा और संवर्धन भी सुनिश्चित करना है। इस प्रकार, गोंड जनजाति की संस्कृति और कला का संरक्षण उनके सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और पहचान को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अगर ये प्रयास सही दिशा में किए जाते हैं, तो यह न केवल गोंड जनजाति के लिए, बल्कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के लिए भी एक बड़ी धरोहर साबित हो सकता है।

संदर्भ

1. Naik, G., & Tripathy, S. K. (2023). THE GOND ARTS AND HANDICRAFTS SHOWCASE THE CULTURAL TRADITION OF THE GOND TRIBE IN KEONJHAR DISTRICT. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(1), 4524–4533. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.5646
2. Majhi, H., & Mohapatra, R. (2023). STUDY ON ARTS, CRAFTS AND DANCES OF THE GOND COMMUNITY OF NUAPADA DISTRICT IN ODISHA. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(1), 708–725. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.1814
3. Sidam, M. (2025). GONDS OF INDIA: A LEGACY OF CULTURE, A STRUGGLE FOR PROGRESS. AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE, 6(2), 4–13. Retrieved from https://agpegondwanajournal.co.in/index.php/agpe/article/view/409
4. Aiswarya Thamanna, & Dr. R. Subramani. (2023). INDIGENOUS COMMUNICATION OF EVERYDAY LIFE AND PHILOSOPHY: AN ANALYSIS OF GOND PAINTINGS IN MADHYA PRADESH. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(2), 572–585. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.645
5. Dr. Rakesh Singh Paraste (2025) . A Study of the Gond Tribe's Livelihood Practices and Traditional Ecological Knowledge Systems in Central India Vol 9, Issue 02, (2025) · Published: Feb 22, 2025 · Pages: 6864-6874. DOI: 10.18535/sshj.v9i02.1676
6. Kedar Singh Uladhi and Pragyan Parimita Muduli (2024), GOND PAINTINGS: REFLECTION OF CULTURE OF GOND TRIBE OF MADHYA PRADESH. Article Id - IJFARD_02_01_001, Pages : 1-6, Date of Publication : 2024/09/27 DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.13847940
7. Malik, Garima and Sethi, Sabina (2018). Gond paintings: A historical evolution. Internat. J. Appl. Home Sci., 5 (4) : 832-836. https://scientificresearchjournal.com/wp-content/uploads/2018/04/Home-Science-Vol-5_A-832-836-Full-Paper.pdf?utm_source=chatgpt.com
8. Sidharth Arur, Theodor Wyeld, Flinders University, Australia. Exploring the Central India Art of the Gond People: contemporary materials and cultural significance https://files01.core.ac.uk/download/pdf/43335564.pdf?utm_source=chatgpt.com
9. The Gond Painting of Prominent Artists (A Exploratory Study of Jangarh Singh Shyam, Ram Singh Urveti). (2019). Journal of Commerce and Trade , 14(2), 41-47. https://doi.org/10.26703/jct.v14i2.107
10. 10. Devendra Singh Porte and all (2025), GONDI PAINTING: A CULTURAL AND AESTHETIC LEGACY OF THE GOND TRIBE Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI) Volume 16, Issue 2, november 2025: 131-143 DOI: 10.53555/q6xgam22
11. RICHA BISWAL (2025), Role of Entrepreneurship Development among Gond Women with reference to Traditional Gond Painting, INTERNATIONAL JOURNAL OF LEGAL SCIENCE AND INNOVATION. [ISSN 2581-9453]. Volume 7 | Issue 3
12. Rahul A. Ghodam, Dr. Shiva Shrivastava (2012), The Literature Review on published Works of Gond tribe (Community). IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876 https://www.ijfans.org/uploads/paper/425d4a2e85f49bec8466531298636814.pdf?utm_source=chatgpt.com
13. Rana, U. (2025). Gond painting, and their women artiest: journey from tradition to modernity. Asian Ethnicity, 26(2), 363–380. https://doi.org/10.1080/14631369.2024.2410860
14. https://ignca.gov.in/divisionss/janapada-sampada/tribal-art-culture/adivasi-art-culture/the-gond-of-madhya-pradesh/?utm_source=chatgpt.com
15. https://en.wikipedia.org/wiki/Jangarh_Singh_Shyam
16. यादव, आर. (2019). गोंड जनजाति की संस्कृति और परंपराएँ. रायपुर: छत्तीसगढ़ राज्य विश्वविद्यालय।
17. शर्मा, एस. (2020). गोंड कला: एक सांस्कृतिक अध्ययन. दिल्ली: साहित्य अकादमी।
18. पांडे, आर. (2018). आदिवासी कला और संस्कृति: छत्तीसगढ़ के गोंडों की दृष्टि. भिलाई: छत्तीसगढ़ पुस्तकालय।